श्री महाकाली चालीसा

इन पाठों के बारे में

स्रोत	हर पाठ अपने स्रोत, परम्परा और संस्करण के साथ छपा है। अन्य परम्पराओं और संस्करणों में शब्दों में थोड़ा अन्तर हो सकता है।
लिप्यन्तरण	रोमन पंक्ति देवनागरी से बना IAST लिप्यन्तरण है (ā = दीर्घ आ, ṃ = अनुस्वार, ḥ = विसर्ग, ś/ṣ = श/ष, c = च)। हिन्दी, अवधी और ब्रज पाठों में शब्द के अन्त का मौन 'अ' नहीं लिखा जाता। लिप्यन्तरण में वैदिक स्वर नहीं दिखते।

श्री महाकाली चालीसा

प्रकार	चालीसा
देवता	माँ काली
संस्करण	मिलान किया गया पाठ
परम्परा	शाक्त
स्रोत	51 चालीसा संग्रह (आरतियों सहित) — रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार (2004) — Scan pages 211–213
आभार	पाठ मुद्रित प्रति के स्कैन से लिया गया। सार और अर्थ: उद्योग ज्योतिष सम्पादकीय टीम।
कॉपीराइट	Traditional devotional text in wide circulation. The poet named in the closing verse is a traditional attribution; no mo

जय जय सीताराम के, मध्यवासिनी अम्ब ।

jay jay sītārām ke, madhyavāsinī amba |

देहु दर्श जगदम्ब अब, करो न मातु विलम्ब ॥

dehu darśa jagadamba ab, karo na mātu vilamba ||

जय तारा जय कालिका, जय दश विद्या वृन्द ।

jay tārā jay kālikā, jay daś vidyā vṛnda |

काली चालीसा रचत, एक सिद्धि कवि हिन्द ॥

kālī cālīsā racat, ek siddhi kavi hinda ||

प्रातः काल उठ जो पढ़े, दुपहरिया या शाम ।

prātaḥ kāl uṭh jo paṛhe, dupahariyā yā śām |

दुःख दारिद्रता दूर हों, सिद्धि होय सब काम ॥

duḥkh dāridratā dūr hoṃ, siddhi hoy sab kām ||

जय काली कंकाल मालिनी ।

jay kālī kaṃkāl mālinī |

जय मंगला महा कपालिनी ॥ १ ॥

jay maṃgalā mahā kapālinī || 1 ||

रक्तबीज बधकारिणि माता ।

raktabīj badhakāriṇi mātā |

सदा भक्त जननकी सुखदाता ॥ २ ॥

sadā bhakta jananakī sukhadātā || 2 ||

शिरो मालिका भूषित अंगे ।

śiro mālikā bhūṣit aṃge |

जय काली जय मद्य मतंगे ॥ ३ ॥

jay kālī jay madya mataṃge || 3 ||

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

हर हृदयारविन्द सुविलासिनि ।

har hṛdayāravinda suvilāsini |

जय जगदम्बा सकल दुःख नाशिनि ॥ ४ ॥

jay jagadambā sakal duḥkh nāśini || 4 ||

ह्रीं काली श्रीं महाकराली ।

hrīṃ kālī śrīṃ mahākarālī |

क्रीं कल्याणी दक्षिणाकाली ॥ ५ ॥

krīṃ kalyāṇī dakṣiṇākālī || 5 ||

जय कलावती जय विद्यावती ।

jay kalāvatī jay vidyāvatī |

जय तारा सुन्दरी महामति ॥ ६ ॥

jay tārā sundarī mahāmati || 6 ||

देहु सुबुद्धि हरहु सब संकट ।

dehu subuddhi harahu sab saṃkaṭ |

होहु भक्त के आगे परगट ॥ ७ ॥

hohu bhakta ke āge paragaṭ || 7 ||

जय ॐ कारे जय हुंकारे ।

jay oṃ kāre jay huṃkāre |

महा शक्ति जय अपरम्पारे ॥ ८ ॥

mahā śakti jay aparampāre || 8 ||

कमला कलियुग दर्प विनाशिनी ।

kamalā kaliyug darpa vināśinī |

सदा भक्त जन के भयनाशिनी ॥ ९ ॥

sadā bhakta jan ke bhayanāśinī || 9 ||

अब जगदम्ब न देर लगावहु ।

ab jagadamba na der lagāvahu |

दुख दरिद्रता मोर हटावहु ॥ १० ॥

dukh daridratā mor haṭāvahu || 10 ||

जयति कराल कालिका माता ।

jayati karāl kālikā mātā |

कालानल समान द्युतिगाता ॥ ११ ॥

kālānal samān dyutigātā || 11 ||

जयशंकरी सुरेशि सनातनि ।

jayaśaṃkarī sureśi sanātani |

कोटि सिद्धि कवि मातु पुरातनि ॥ १२ ॥

koṭi siddhi kavi mātu purātani || 12 ||

कपर्दिनी कलि कल्प बिमोचनि ।

kapardinī kali kalpa bimocani |

जय विकसित नव नलिनबिलोचनि ॥ १३ ॥

jay vikasit nav nalinabilocani || 13 ||

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

आनन्द करणि आनन्द निधाना ।

ānanda karaṇi ānanda nidhānā |

देहुमातु मोहि निर्मल ज्ञाना ॥ १४ ॥

dehumātu mohi nirmal jñānā || 14 ||

करुणामृत सागर कृपामयी ।

karuṇāmṛt sāgar kṛpāmayī |

होहु दुष्ट जनपर अब निर्दयी ॥ १५ ॥

hohu duṣṭa janapar ab nirdayī || 15 ||

सकल जीव तोहि परम पियारा ।

sakal jīv tohi param piyārā |

सकल विश्व तोरे आधारा ॥ १६ ॥

sakal viśva tore ādhārā || 16 ||

प्रलय काल में नर्तन कारिणि ।

pralay kāl meṃ nartan kāriṇi |

जय जननी सब जगकी पालनि ॥ १७ ॥

jay jananī sab jagakī pālani || 17 ||

महोदरी महेश्वरी माया ।

mahodarī maheśvarī māyā |

हिमगिरि सुता विश्व की छाया ॥ १८ ॥

himagiri sutā viśva kī chāyā || 18 ||

स्वछन्द रद मारद धुनि माही ।

svachanda rad mārad dhuni māhī |

गर्जत तुम्ही और कोउ नाही ॥ १९ ॥

garjat tumhī aur kou nāhī || 19 ||

स्फुरति मणिगणाकार प्रताने ।

sphurati maṇigaṇākār pratāne |

तारागण तू ब्योंम विताने ॥ २० ॥

tārāgaṇ tū byoṃm vitāne || 20 ||

श्री धारे सन्तन हितकारिणी ।

śrī dhāre santan hitakāriṇī |

अग्नि पाणि अति दुष्ट विदारिणि ॥ २१ ॥

agni pāṇi ati duṣṭa vidāriṇi || 21 ||

धूम्र विलोचनि प्राण विमोचनि ।

dhūmra vilocani prāṇ vimocani |

शुम्भ निशुम्भ मथनि वरलोचनि ॥ २२ ॥

śumbha niśumbha mathani varalocani || 22 ||

सहस भुजी सरोरुह मालिनि ।

sahas bhujī saroruh mālini |

चामुण्डे मरघट की वासिनि ॥ २३ ॥

cāmuṇḍe maraghaṭ kī vāsini || 23 ||

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

खप्पर मध्य सुशोणित साजी ।

khappar madhya suśoṇit sājī |

मारेहु माँ महिषासुर पाजी ॥ २४ ॥

mārehu mām mahiṣāsur pājī || 24 ||

अम्ब अम्बिका चण्ड चण्डिका ।

amba ambikā caṇḍa caṇḍikā |

सब एके तुम आदि कालिका ॥ २५ ॥

sab eke tum ādi kālikā || 25 ||

अजा एकरूपा बहुरूपा ।

ajā ekarūpā bahurūpā |

अकथ चरित्र तव शक्ति अनूपा ॥ २६ ॥

akath caritra tav śakti anūpā || 26 ||

कलकत्ता के दक्षिण द्वारे ।

kalakattā ke dakṣiṇ dvāre |

मूरति तोर महेशि अपारे ॥ २७ ॥

mūrati tor maheśi apāre || 27 ||

कादम्बरी पानरत श्यामा ।

kādambarī pānarat śyāmā |

जय मातंगी काम के धामा ॥ २८ ॥

jay mātaṃgī kām ke dhāmā || 28 ||

कमलासन वासिनी कमलायनि ।

kamalāsan vāsinī kamalāyani |

जय श्यामा जय जय श्यामायनि ॥ २९ ॥

jay śyāmā jay jay śyāmāyani || 29 ||

मातंगी जय जयति प्रकृति हे ।

mātaṃgī jay jayati prakṛti he |

जयति भक्ति उर कुमति सुमति हे ॥ ३० ॥

jayati bhakti ur kumati sumati he || 30 ||

कोटिब्रह्म शिव विष्णु कामदा ।

koṭibrahma śiv viṣṇu kāmadā |

जयति अहिंसा धर्म जन्मदा ॥ ३१ ॥

jayati ahiṃsā dharma janmadā || 31 ||

जल थल नभमण्डल में व्यापिनी ।

jal thal nabhamaṇḍal meṃ vyāpinī |

सौदामिनि मध्य अलापिनि ॥ ३२ ॥

saudāmini madhya alāpini || 32 ||

झननन तच्छु मरिरिन नादिनि ।

jhananan tacchu maririn nādini |

जय सरस्वती वीणा वादिनी ॥ ३३ ॥

jay sarasvatī vīṇā vādinī || 33 ||

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ।

oṃ aiṃ hrīṃ klīṃ cāmuṇḍāyai vicce |

कलित कण्ठ शोभित नरमुण्डा ॥ ३४ ॥

kalit kaṇṭha śobhit naramuṇḍā || 34 ||

जय ब्रह्माण्ड सिद्धि कवि माता ।

jay brahmāṇḍa siddhi kavi mātā |

कामाख्या और काली माता ॥ ३५ ॥

kāmākhyā aur kālī mātā || 35 ||

हिंगलाज विन्ध्याचल वासिनि ।

hiṃgalāj vindhyācal vāsini |

अट्टहासिनी अरु अघन नाशिनी ॥ ३६ ॥

aṭṭahāsinī aru aghan nāśinī || 36 ||

कितनी स्तुति करूँ अखण्डे ।

kitanī stuti karūm akhaṇḍe |

तू ब्रह्माण्डे शक्तिजितचण्डे ॥ ३७ ॥

tū brahmāṇḍe śaktijitacaṇḍe || 37 ||

करहु कृपा सबपे जगदम्बा ।

karahu kṛpā sabape jagadambā |

रहहिं निशंक तोर अवलम्बा ॥ ३८ ॥

rahahiṃ niśaṃk tor avalambā || 38 ||

चतुर्भुजी काली तुम श्यामा ।

caturbhujī kālī tum śyāmā |

रूप तुम्हार महा अभिरामा ॥ ३९ ॥

rūp tumhār mahā abhirāmā || 39 ||

खड्ग और खप्पर कर सोहत ।

khaḍga aur khappar kar sohat |

सुर नर मुनि सबको मन मोहत ॥ ४० ॥

sur nar muni sabako man mohat || 40 ||

तुम्हरी कृपा पावे जो कोई ।

tumharī kṛpā pāve jo koī |

रोग शोक नहिं ताकहँ होई ॥ ४१ ॥

rog śok nahiṃ tākaham hoī || 41 ||

जो यह पाठ करे चालीसा ।

jo yah pāṭh kare cālīsā |

तापर कृपा करहि गौरीशा ॥ ४२ ॥

tāpar kṛpā karahi gaurīśā || 42 ||

जय कपालिनी जय शिवा, जय जय जय जगदम्ब ।

jay kapālinī jay śivā, jay jay jay jagadamba |

सदा भक्तजन केरि दुःख, हरहु मातु अवलम्ब ॥

sadā bhaktajan keri duḥkh, harahu mātu avalamba ||

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

अर्थ

महाकाली को कंकालमालिनी, रक्तबीज संहारिणी, ह्रीं-श्रीं-क्रीं बीज, तारा और सुन्दरी कहा गया है, जो प्रलय में नर्तन करती हैं और सब जीवों की माता व पालक भी हैं। चालीसा उन्हें श्मशानवासिनी चामुण्डा, कलकत्ते की दक्षिणा काली, कामाख्या, हिंगलाज और विन्ध्याचल रूप में याद कर दरिद्रता दूर करने और निर्मल ज्ञान देने की प्रार्थना करती है।

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

इस दस्तावेज़ के बारे में

इस दस्तावेज़ के पाठ सार्वजनिक (पब्लिक डोमेन) पारम्परिक भक्ति पाठ हैं या हमारी टीम द्वारा लिखे गए हैं, और अपने दर्ज स्रोत व संस्करण के साथ छपे हैं।

अर्थ हमारे शब्दों में संक्षिप्त व्याख्याएँ हैं, विद्वत्तापूर्ण अनुवाद नहीं। किसी पाठ के अपने श्लोकों में बताए लाभ पाठ का अंश हैं, गारण्टी नहीं।

कुछ साधनाएँ परम्परा से गुरु-मार्गदर्शन में की जाती हैं। अपनी परम्परा के मार्गदर्शन का पालन करें।